हालत और ख़राब हो सकती थी

एक यहूदी लोककथा

मर्गोट, हिंदी : विदूषक

हालत और ख़राब हो सकती थी

एक यहूदी लोककथा

मर्गोट, हिंदी : विदूषक

पुराने ज़माने की बात है. एक छोटे से गाँव में एक अभागा गरीब आदमी अपनी माँ, पत्नी और छह बच्चों के साथ एक कमरे की झोपड़ी में रहता था. क्योंकि घर इतना छोटा था और वहां इतनी भीड़ थी, इसलिए आदमी और उसकी पत्नी में अक्सर झगड़ा होता था. बच्चे भी खूब शोर मचाते थे और एक-दूसरे से लड़ते-झगड़ते थे. सर्दियों में जब रातें लम्बी होतीं और दिन छोटे होते तो ज़िन्दगी और भी कठिन हो जाती. उस झोपड़ी में दिन भर रोना-पीटना और झगड़ा चलता रहता था. एक दिन उस अभागे आदमी से जब यह मुसीबत सहन नहीं हुई तो वो यहूदी पुजारी (RABBI) के पास सलाह लेने गया.

“पवित्र पुजारी,” वो चिल्लाया, “मेरी स्थिति बहुत ख़राब है, और अब वो बद-से-बदतर हो रही है. हम लोग बहुत गरीब हैं और फिर नौ लोग एक छोटी सी झोपड़ी में रहने को मजबूर हैं. वहां बहुत भीड़ और शोर-शराबा है. आप मेरी मदद करें. मैं आपकी सलाह का पालन करूंगा.”

पुजारी ने कुछ देर सोचा फिर अपनी दाढ़ी सहलाई. अंत में उसने कहा, “मुझे बताओ, क्या तुम्हारे पास कुछ जानवर हैं - एक-दो मुर्गियां?”

“हाँ,” आदमी ने उत्तर दिया. “मेरे पास कुछ मुर्गियां, एक मुर्गा और एक बत्तख भी है.”

“बहुत अच्छा,” पुजारी ने कहा. “अब तुम एक काम करो. उन मुर्गियों, मुर्गे और बत्तख को भी झोपड़ी के अन्दर अपने साथ रहने के लिए ले जाओ.”

“मैं आपके बताए अनुसार करूंगा,” आदमी ने कहा. वैसे उसे पुजारी की सलाह पर कुछ आश्चर्य ज़रूर हुआ.

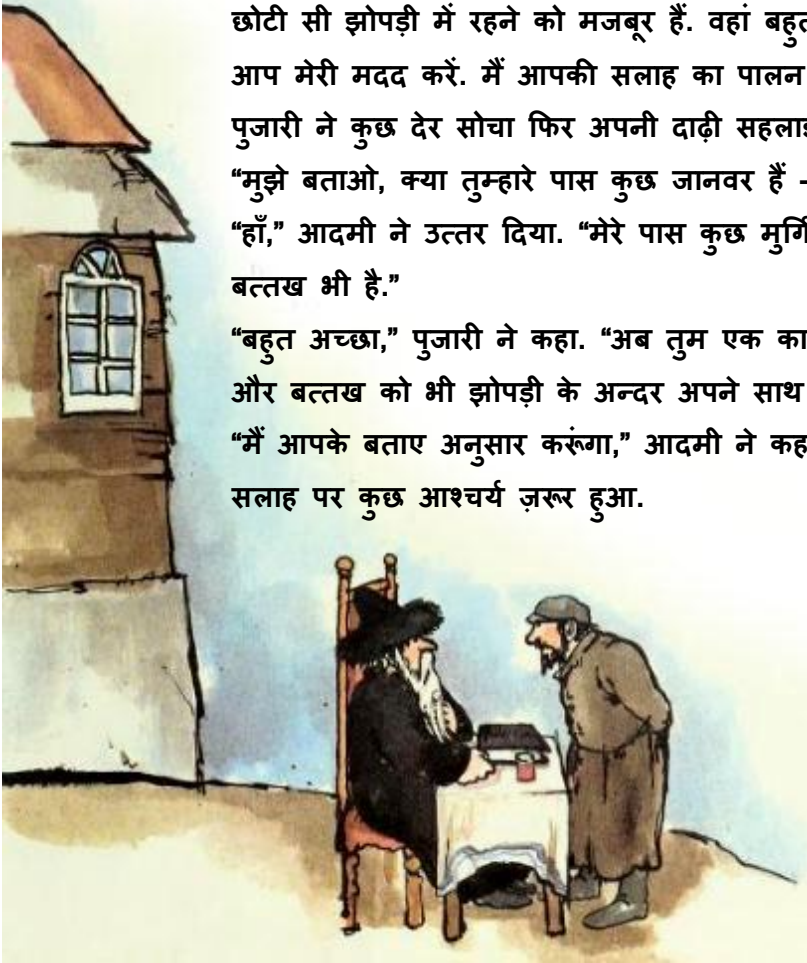

घर वापिस पहुँचने के बाद उस अभागे आदमी ने मुर्गियों, मुर्गे और बत्तख को उनके दबड़े से निकाला और वो उन्हें भी अपनी छोटी झोपड़ी के अन्दर ले गया.

कुछ दिनों और हफ़्तों के बाद झोपड़ी में पहले के मुकाबले जीना और हराम हो गया. अब लड़ाई-झगड़े, रोने-चीखने में, मुर्गियों और बत्तख की आवाज़ें और मिल गईं. सूप में पंख गिरने लगे! झोपड़ी उतनी ही छोटी रही पर बच्चे अब पहले से कुछ बड़े हुए. जब उस अभागे आदमी से यह सब कुछ नहीं देखा गया तो वो फिर से भागा-भागा पुजारी के पास गया.

“पवित्र पुजारी,” उसने रोते हुए कहा, “देखो मुझ पर कितनी मुसीबत आन पड़ी है. अब लड़ाई-झगड़े, रोने-चीखने के साथ-साथ घर में जानवरों की आवाज़ें भी हैं. साथ में सूप में पंख गिर रहे हैं. पुजारी, इससे बदतर और भला क्या हो सकता है. कृपा मेरी मदद करें.”

पुजारी ने उस आदमी को बहुत ध्यान से सुना. अंत में उसने कहा, “अच्छा यह बताओ, क्या तुम्हारे पास कोई बकरी है?”

“हाँ महाशय, मेरे पास एक बूढ़ी बकरी ज़रूर है, पर अब वो किसी काम की नहीं है.”

“बहुत अच्छा,” पुजारी ने कहा. “अब तुम घर जाओ, और उस बकरी को भी अपनी झोपड़ी में रहने के लिए अन्दर लाओ.”

“आप यह क्या कह रहे हैं!” आदमी ने रोते हुए कहा.

“देखो, मेरी बात मानो,” पुजारी ने कहा. “घर जाओ और बकरी को भी अपने साथ झोपड़ी में रखो.”

फिर वो अभागा आदमी अपना मुंह लटकाए, पैर पटकते हुए वापिस घर आया. फिर वो अपनी बूढ़ी बकरी को भी झोपड़ी में रहने के लिए अन्दर लाया.

कुछ दिनों और हफ़्तों के बाद उस आदमी की झोपड़ी में रहना बिल्कुल दुश्वार हो गया. अब लड़ाई-झगड़े, रोने-चीखने और जानवरों की आवाजों के साथ-साथ बकरी सभी को धक्का देती और अपने सींग मारती. अब बच्चे और बड़े हो गए थे, और झोपड़ी पहले से छोटी नज़र आने लगी थी.

जब उस अभागे आदमी से और ज्यादा बर्दाश्त नहीं हुआ तो वो फिर से भागा-भागा पुजारी के पास पहुंचा.

“पवित्र पुजारी, मेरी मदद करो!” वो जोर से चीखा. “अब वो बकरी घर में कुलांचे मार रही है. अब उस घर में रहना बिल्कुल दुश्वार हो गया है.”

पुजारी ने तसल्ली से उस आदमी की पूरी बात सुनी और फिर उसने सोचा. अंत में उसने कहा, “अच्छा मुझे यह बताओ. क्या तुम्हारे पास कोई गाय है? जवान है या बूढ़ी, उससे कुछ फर्क नहीं पड़ेगा.”

“हाँ पुजारी, यह सच है कि मेरे पास एक गाय है,” उस गरीब आदमी ने डरते-डरते कबूल किया.

“फिर तुम घर जाओ,” पुजारी ने कहा, “उस गाय को भी अपनी झोपड़ी में रखो.”

“यह करना सम्भव नहीं होगा, महाशय!” आदमी ने कहा.

“इसे तुरंत जाकर करो,” पुजारी ने आदेश दिया.

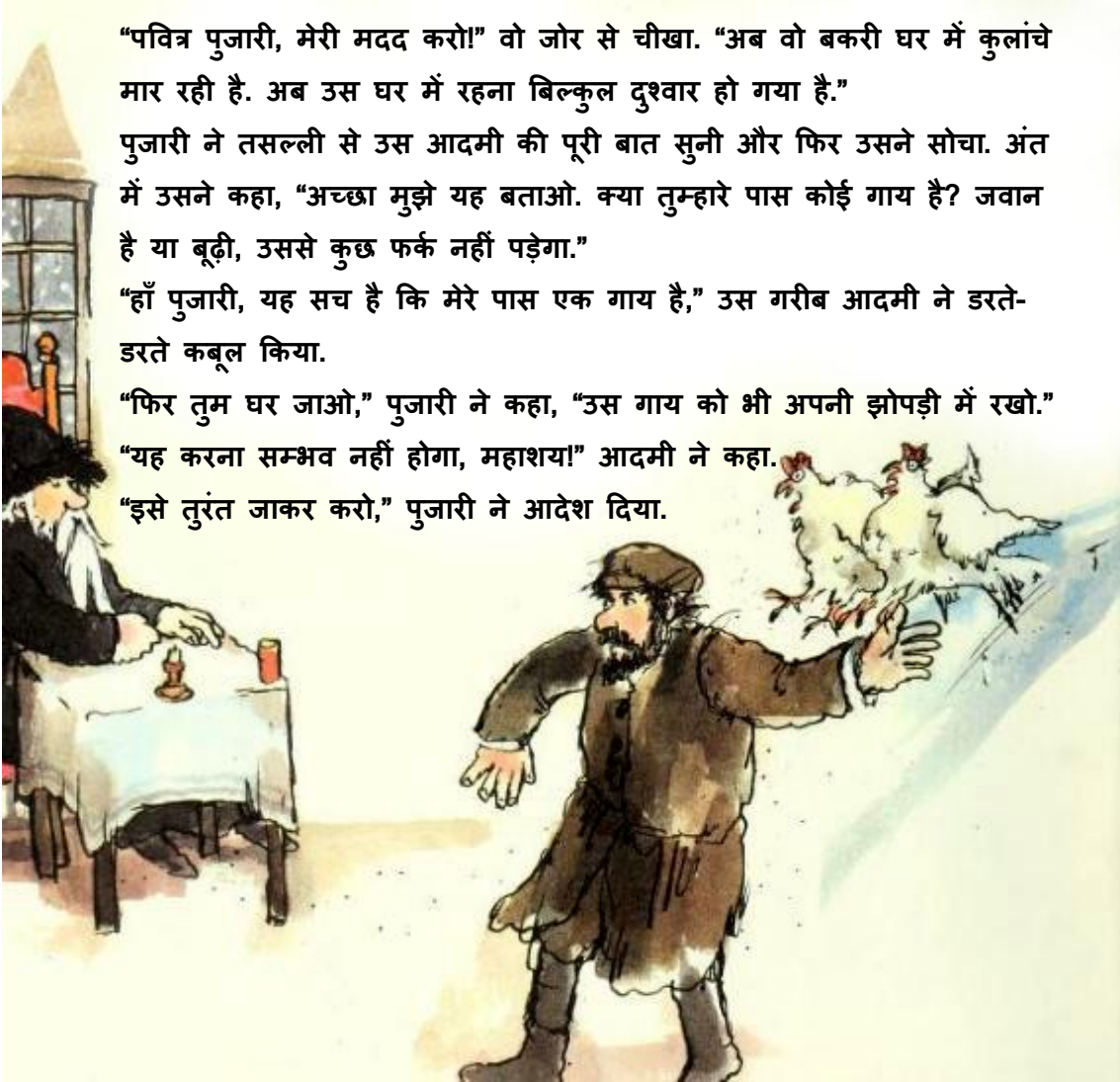

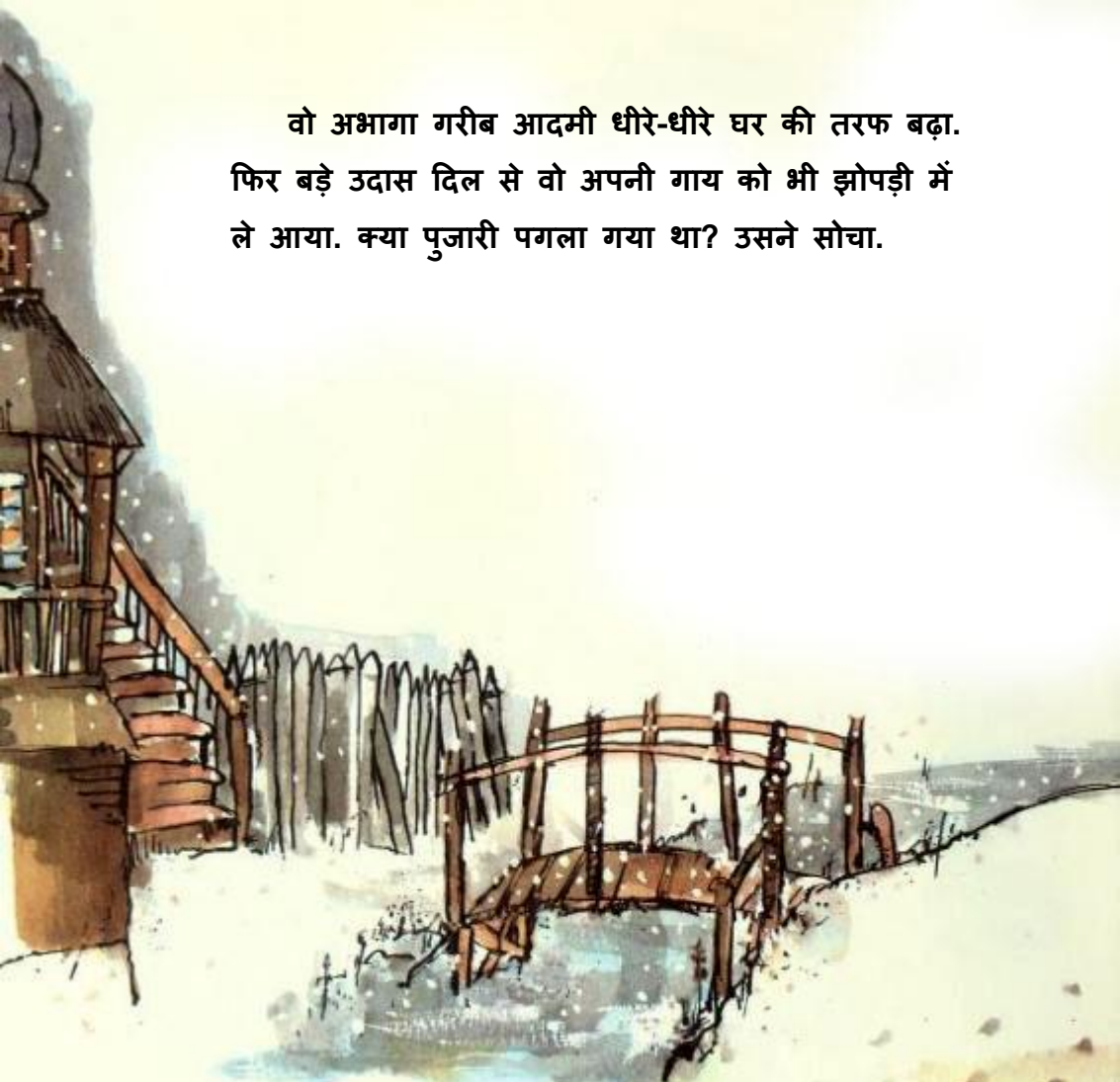

वो अभागा गरीब आदमी धीरे-धीरे घर की तरफ बढ़ा. फिर बड़े उदास दिल से वो अपनी गाय को भी झोपड़ी में ले आया. क्या पुजारी पगला गया था? उसने सोचा.

कुछ दिनों और हफ़्तों के बाद झोपड़ी में जीवन बद-से-बदतर हो गया. अब हालात, पहले से कहीं ज्यादा खराब थे. अब हर कोई लड़ता-झगड़ता – मुर्गियां भी. बकरी पूरे दिन कूदती-फांदती. गाय अपने पैरों से हरेक चीज़ को कुचलती. अपनी दयनीय हालत देखकर उस आदमी को यकीन नहीं हुआ. अंत में जब हालात उसकी बर्दाश्त के बाहर हो गए तो वो फिर से पुजारी के पास मदद मांगने पहुंचा.

“पवित्र पुजारी,” वो आदमी जोर से चिल्लाया, “मुझे बचाओ, मेरी मदद करो, मेरी ज़िन्दगी पूरी तरह तबाह हो गई है! गाय हर चीज़ को कुचल रही है. घर में सांस लेने की भी जगह नहीं बची है. अब हालात मेरी बर्दाश्त से बाहर निकल गए हैं!”

पुजारी ने उस आदमी की बात सुनी और सोचा. अंत में उसने कहा, “अच्छा अब घर वापिस जाओ मेरे दोस्त, और उन जानवरों को अपने घर से बाहर निकाल दो.”

“मैं अभी दौड़ कर जाता हूँ, और यह काम तुरंत करता हूँ,” उस आदमी ने कहा.

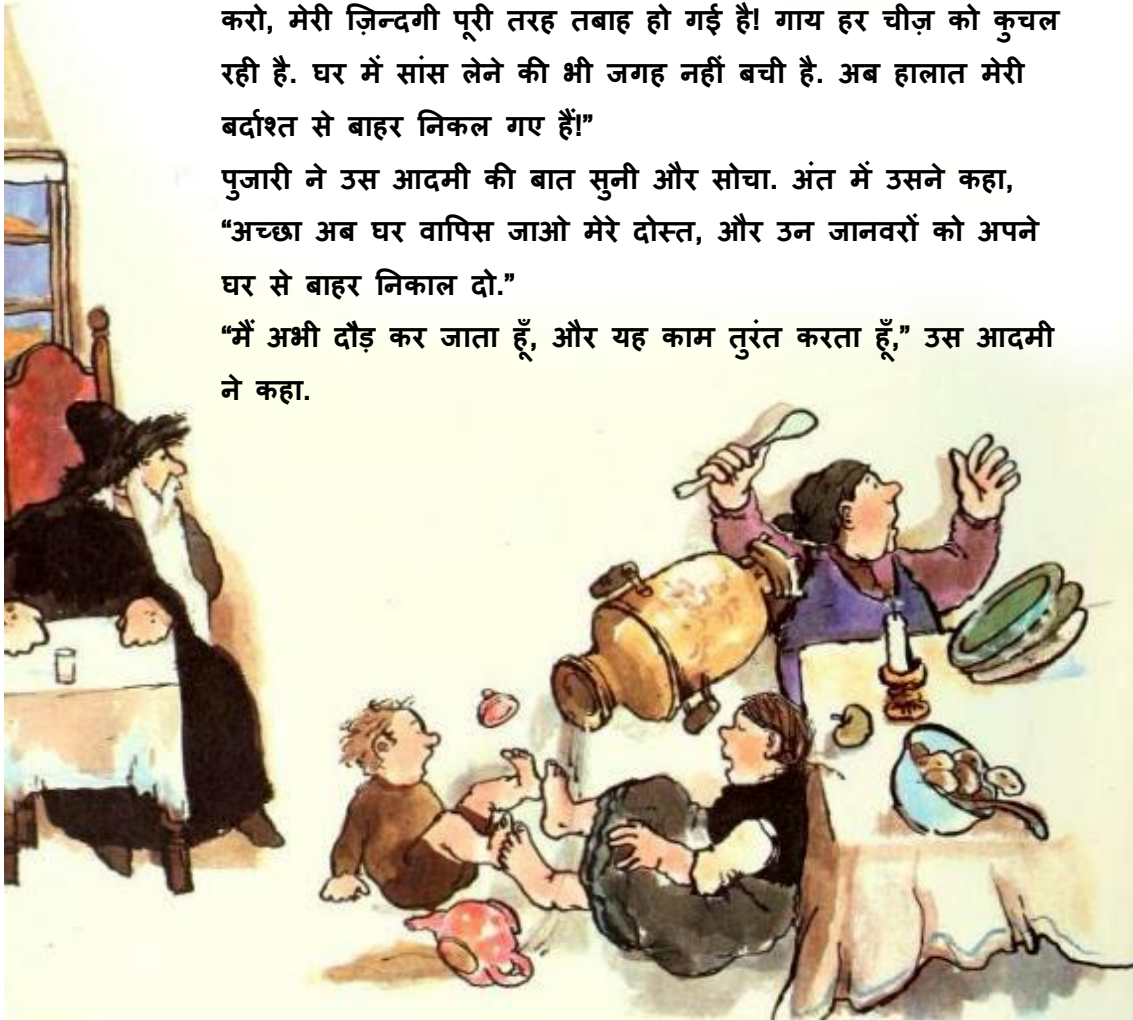

उसके बाद वो अभागा, गरीब आदमी दौड़ा-दौड़ा घर वापिस गया. उसने अपनी छोटी सी झोपड़ी में से गाय, बकरी, मुर्गियों, मुर्गे और बत्तख को तुरंत बाहर निकाला.

उस रात वो गरीब आदमी और उसका पूरा परिवार लम्बे अर्से बाद शांति से, बड़े चैन की नींद सोया. उस रात जानवरों की कोई चीखा-चिल्ली नहीं थी. सब को सांस लेने के लिए बहुत जगह थी.

अगले दिन वो गरीब आदमी पुजारी के पास दौड़कर वापिस गया.

“पवित्र पुजारी,” उसने ख़ुशी से रोते हुए कहा, “आपका बहुत शुक्रिया! आपके कारण मेरी ज़िन्दगी पहले से कहीं बेहतर हुई है. झोपड़ी में अब सिर्फ मेरा परिवार रहता है और वहां बहुत शांति है...! मैं बेहद खुश हूँ और आपका शुक्रिया अदा करता हूँ!”